International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 891-894

दृष्टिबाधित और दृष्टिवान विधार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन

[1] संदीप कुमार, [2] डॉ. अंग्रेज सिंह

[1] शिक्षा-विभाग, कु.वि.कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत।

[2] सहायक प्रोफेसर, विश्वविद्यालय, शिक्षण महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत।

सारांश

हमारी आधुनिक शिक्षा प्रणाली कई तरीकों में सन्तोषजनक नहीं है। बच्चों की देखभाल भी अच्छी तरह नहीं हो पा रही है। बच्चों के लिए शिक्षा की योजना बनाते समय व्यक्तिगत भेदों को न तो कोई महत्व दिया है और न ही उन पर विचार किया जाता है। इसके अतिरिक्त विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा का क्षेत्र भी बहुत ही कम विकसित हुआ है। इस शोध कार्य में दृष्टिबाधित और दृष्टिवान विधार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के तुलनात्मक अध्ययन में चंडीगढ़ और नरवाना के दो स्कूलों से 50-50 विधार्थियों का चयन आकस्मिक न्यायदर्श के द्वारा किया गया । अध्ययन का विश्लेषण करने के बाद निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि दृष्टिबाधित व दृष्टिवान छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

मूल शब्द: विशेष शिक्षा, दृष्टिबाधित व दृष्टिवान, मानसिक स्वास्थ्य

प्रस्तावना

मनुष्य को अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ बनाने का श्रेय शिक्षा को ही जाता है। शिक्षा के माध्यम से ही संसार की वैज्ञानिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक प्रगति सम्भव हो सकी है। मनुष्य को पशुता से ऊँचा उठाकर एक तार्किक प्राणी बनाने में शिक्षा की अहम भूमिका रही है। मानव जाति आज जिस सभ्यता के शिखर पर पहुँच गई है, उसकी मूल प्रवृत्तियों में परिवर्तन का ही परिणाम है, जो कि शिक्षा द्वारा ही किया जाता है। अत: व्यक्ति को सभ्य सामाजिक प्राणी बनाने में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

आज भारत में शिक्षा के क्षेत्र में अद्भुत उन्नत्ति हुई है। एक समय था जब शिक्षा पर केवल महत्वपूर्ण लोगों का ही अधिकार था। आवश्यक तथा सार्वभौमिक शिक्षा का कोई प्रावधान नहीं था। परन्तु आज बिना किसी भेदभाव के शिक्षा सारे जनसमूह का अधिकार बन गयी है। यह प्रजातंत्र के कारण संभव हो पाया है, क्योंकि आज भारत एक स्वतन्त्र व प्रजातान्त्रिक राष्ट्र है। इसलिए इसमें सभी को शिक्षा प्राप्त करने का समान अधिकार है। भारत को इस बात का आभास हो चुका है कि बच्चे भारत का भविष्य हैं और अपनी सार्वभौमिकता एवं स्वतंत्रता की रक्षा के लिए यह आवश्यक है कि सभी को शिक्षा उपलब्ध कराई जाए। राजनीतिक विचारक इस बात पर ज़ोर देते हैं कि बच्चे की शिक्षा मानव व समाज की उन्नत्ति के लिए अति आवश्यक है।

शोध के उद्देश्य

1. दृष्टिबाधित एवं दृष्टिवान विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
2. दृष्टिबाधित एवं दृष्टिवान विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में अन्तर का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. दृष्टिबाधित एवं दृष्टिवान विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई अन्तर नहीं होगा।

अध्ययन की सीमाये

1. प्रस्तुत अध्ययन हरियाणा राज्य के तहसील नरवाना व केन्द्र शासित प्रदेश चण्डीगढ़ के विद्यार्थियों तक ही सीमित है।
2. वर्तमान अध्ययन केवल 100 विद्यार्थियों पर किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध में केवल कक्षा 8वीं से 10वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है ।

प्रतिचयन

दृष्टिबाधित के लिए संस्थान, चण्डीगढ़, सैक्टर-26 से 50 विद्यार्थी व आर्य वरिष्ट माध्यमिक विद्यालय नरवाना से 50 विद्यार्थियों का चयन आकस्मिक न्यादर्श के द्वारा किया गया।

शोध विधि

इस शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया ।

उपकरण

अरूण कुमार सिंह और अलपना सैन गुप्ता द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग अध्ययन के लिए उपकरण के रूप में किया गया ।

सांख्यिकी तकनीक का प्रयोग

आंकड़ों के परीक्षण के लिए प्रतिशत विधि और टी-टैस्ट का प्रयोग किया गया।

विश्लेषण एवं व्याख्या

किसी व्यक्ति द्वारा आलोचना किए जाने पर आप क्या क्रोधित हो जाते है?

तालिका 1

क्रं.सं.	विद्यार्थी	N	प्रतिक्रिया		प्रतिशत	
			हाँ	नही	हाँ	नही
1	दृष्टिबाधित	50	28	22	56%	44%
2	दृष्टिवान	50	24	26	48%	52%
	कुल	100	52	48	52%	48%

तालिका 1 से यह निष्कर्ष निकलता है कि 56% दृष्टिबाधित विद्यार्थियों ने कहा कि हाँ, वे किसी व्यक्ति द्वारा आलोचना किए जाने पर क्रोधित हो जाते है जबकि 44% विद्यार्थियों ने नहीं में उत्तर दिया। वहीं दूसरी ओर 48% दृष्टिवान विद्यार्थियों ने कहा कि हाँ वह किसी व्यक्ति द्वारा आलोचना किए जाने पर क्रोधित हो जाते है जबकि 52% विद्यार्थियों ने नहीं में उत्तर दिया। इससे हम यहां पर यह स्पष्ट होता है कि दृष्टिबाधित और दृष्टिवान छात्रों में इस प्रश्न के प्रति इन के दृष्टिकोण में कोई विशेष अन्तर नही है ।

कक्षा में यदि शिक्षक कुछ प्रश्न करते है और आप उसका जवाब नही दे पाते तो क्या आप अच्छा महसूस नही करते है?

तालिका 2

क्रं.सं.	विद्यार्थी	N	प्रतिक्रिया		प्रतिशत	
			हाँ	नही	हाँ	नही
1	दृष्टिबाधित	50	40	10	80%	20%
2	दृष्टिवान	50	39	11	78%	22%
	कुल	100	79	21	79%	21%

तालिका 2 से यह निष्कर्ष निकलता है कि 80% दृष्टिबाधित विद्यार्थियों ने कहा कि हाँ यदि कक्षा में शिक्षक कुछ प्रश्न करते हैं और आप उसका जबाब नहीं दे पाते तो क्या आप अच्छा महसूस नही करते है। जबकि 20% विद्यार्थियों ने नहीं में उत्तर दिया। वहीं दूसरी ओर 78% दृष्टिवान विद्यार्थियों ने कहा कि हाँ वे शिक्षक के प्रश्न करने पर अच्छा महसूस नही करते हैं। जबकि 22% विद्यार्थियों ने नहीं में उत्तर दिया। यानि की दृष्टिबाधित और दृष्टिवान छात्रों के दृष्टिकोण में इस प्रश्न के प्रति कोई खास अन्तर नहीं है । इस प्रकार यहां पर यह स्पष्ट होता है कि इस प्रश्न के प्रति दृष्टिबाधित व दृष्टिवान छात्रों के दृष्टिकोण में कोई विशेष अन्तर नहीं है ।

परीक्षा में फेल हो जाने पर क्या आपका आत्महत्या करने का मन करता है?

तालिका 3

क्रं.सं.	विद्यार्थी	N	प्रतिक्रिया		प्रतिशत	
			हाँ	नही	हाँ	नही
1	दृष्टिबाधित	50	09	41	18%	82%
2	दृष्टिवान	50	15	35	30%	70%
	कुल	100	24	76	24%	76%

तालिका 3 से यह निष्कर्ष निकलता है कि 18% दृष्टिबाधित विद्यार्थियों ने कहा कि हाँ परीक्षा में फेल हो जाने पर उनका आत्महत्या करने को मन करता है। जबकि 82% विद्यार्थियों ने नहीं में उत्तर दिया। वहीं दूसरी ओर 30% दृष्टिवान विद्यार्थियों ने कहा कि हाँ परीक्षा में फेल हो जाने पर उनका आत्महत्या करने को मन करता है। जबकि 70% विद्यार्थियों ने नहीं में उत्तर दिया। यह स्पष्ट होता है कि इस प्रश्न के प्रति दृष्टिवान छात्रों के दृष्टिकोण 12 प्रतिशत का अन्तर है । जो इस प्रश्न के प्रति इनके अलग-अलग मानसिक स्वास्थ्य को प्रदर्शित करता है।

साँप, छिपकली या मकड़ी या अन्य जानवर देखने पर क्या आप काफी डर जाते है?

तालिका 4

क्रं.सं.	विद्यार्थी	N	प्रतिक्रिया		प्रतिशत	
			हाँ	नही	हाँ	नही
1	दृष्टिबाधित	50	15	35	30%	70%
2	दृष्टिवान	50	34	16	68%	32%
	कुल	100	49	51	49%	51%

तालिका 4 से यह निष्कर्ष निकलता है कि 30% दृष्टिबाधित विद्यार्थियों का मानना है कि वे साँप, छिपकली, मकड़ी या अन्य जानवर देखने पर काफी डर जाते है जबकि 70% विद्यार्थियों ने नहीं में उत्तर दिया। वहीं दूसरी ओर 68% दृष्टिवान विद्यार्थियों ने कहा कि हाँ वह साँप, छिपकली या

मकड़ी या अन्य जानवर देखने पर काफी डर जाते हैं जबकि 32% विद्यार्थियों ने नहीं में उत्तर दिया। इस प्रश्न के प्रतिक्रिया के रूप में हम पाते है कि दृष्टिबाधित व दृष्टिवान छात्रों के मतों के आधार पर जो अन्तर पाया गया है उसमें कोई विशेष अन्तर नहीं है । अत: इस आधार पर हम पाते है कि इनके मानसिक कौशल में कोई विशेष अन्तर नही है।

गृह कार्य नही करके जाने पर क्या भीतर-भीतर क्षुब्ध रहते हैं?

तालिका 5

क्रं.सं.	विद्यार्थी	N	प्रतिक्रिया		प्रतिशत	
			हाँ	नही	हाँ	नही
1	दृष्टिबाधित	50	30	20	60%	40%
2	दृष्टिवान	50	45	05	90%	10%
	कुल	100	75	25	75%	25%

तालिका 5 से यह निष्कर्ष निकलता है कि 60% दृष्टिबाधित विद्यार्थियों का कहना है कि गृह कार्य नही करके जाने पर वह भीतर-भीतर क्षुब्ध रहते हैं जबकि 40% विद्यार्थियों ने नहीं में उत्तर दिया। वहीं दूसरी ओर 90% दृष्टिवान विद्यार्थियों ने कहा कि हाँ गृह कार्य नही करके जाने पर वह भीतर-भीतर क्षुब्ध रहते हैं जबकि 10% विद्यार्थियों ने नहीं में उत्तर दिया। इस प्रश्न की प्रतिक्रिया के रूप में दृष्टिवान व दृष्टिबाधित छात्रों के मतों में पाए जाने वाले अन्तर के आधार पर हम पाते है कि इन छात्र मतों में जो अन्तर है वह संयोग के कारण हुआ है अत: इनके मानसिक स्वास्थ्य में अन्तर है वह महत्वहीन है ।

क्या आप किसी पल में अपने आप बहुत खुश हो जाते हैं एवं दूसरे पल में बहुत उदास हो जाते हैं?

तालिका 6

क्रं.सं.	विद्यार्थी	N	प्रतिक्रिया		प्रतिशत	
			हाँ	नही	हाँ	नही
1	दृष्टिबाधित	50	32	18	64%	36%
2	दृष्टिवान	50	36	14	72%	28%
	कुल	100	68	32	68%	32%

तालिका 6 से यह निष्कर्ष निकलता है कि 64% दृष्टिबाधित विद्यार्थियों का कहना है कि हाँ वे किसी पल में बहुत खुश हो जाते हैं और दूसरे ही पल में बहुत उदास हो जाते हैं जबकि 36% विद्यार्थियों ने नहीं में उत्तर दिया। वहीं दूसरी ओर 72% दृष्टिवान विद्यार्थियों ने कहा कि हाँ वे किसी पल में बहुत खुश हो जाते हैं और दूसरे ही पल में बहुत उदास हो जाते हैं जबकि 28% विद्यार्थियों ने नही में उत्तर दिया। इस प्रश्न के आधार पर दृष्टिवान और दृष्टिबाधित छात्रों में पाया जाने वाला अन्तर संयोग आधारित भी कहा जा सकता है । जो इस प्रश्न के प्रति इनके समान मानसिक स्वास्थ्य का बोध करवाता है ।

मुख्य परिणाम

दृष्टिबाधित व दृष्टिवान छात्रों के प्राप्त मध्यमान क्रमश: 26.24 और 27.72 परन्तु इनके मानसिक स्वास्थ्य मे कोई अन्तर नहीं है । अत: परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है ।

शैक्षिक निहितार्थ

शिक्षा के क्षेत्र में कोई भी अनुसंधान कार्य तब तक तर्कपूर्ण नही होता जब तक उसका शैक्षिक निहितार्थ न हो। किसी भी अनुसंधान कार्य का उद्देश्य यह होता है कि सम्बन्धित क्षेत्र में सुधार करवाना और इसक महत्व प्रत्येक सम्बन्धित व्यक्ति के जीवन में होना आवश्यक है । इस अनुसंधान में दृष्टिवान और दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया गया है। इस अनुसंधान से प्राप्त परिणामों की सहायता से उनके मानसिक स्वास्थ्य के विकास में सहायता की जा सकती है। अनुसंधान के परिणामों से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के विकास में अभिभावकों तथा अध्यापकों का योगदान पाया जाता है। दृष्टिवान और दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के विकास के लिए हम निम्नलिखित कदम उठा सकते है-

1. विद्यालय में बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए स्वतन्त्र वातावरण देना चाहिए।
2. दृष्टिबाधित बच्चों में पाई जाने वाली हीन भावना को दूर किया जाना चाहिए। इसके लिए उन्हें अधिक से अधिक पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए ।
3. अध्यापकों और अभिभावकों को बच्चों को सृजनात्मक कार्यो में भाग लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
4. दृष्बिाधित बालकों की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में नवीन उपकरणों का प्रयोग करना चाहिए।

आगामी शोध कार्य के लिए सुझाव

1. इस अनुसंधान के लिए अन्य क्षेत्रों को भी लिया जा सकता है।
2. अधिक से अधिक विद्यालयों के नमूनों को लिया जा सकता है।
3. अनुसंधान कार्य को अन्य जिलों में भी जहाँ दृष्टिहीन विद्यालय हों वहां पर भी किया जा सकता है।

संदर्भ

1. अलपोर्ट जी.वी. एंड वैरन, पी.एफ. (1931) टैस्ट ऑफ पर्सनल वैल्यूस, साईकोल वोल्युम 26.
2. अलपोर्ट, जी. डबल्यू. (1961). पैटर्न एंड ग्रोथ इन पर्सनैलिटी, न्यूयार्क, हाल्ट।
3. एसटीन, ऐ. डब्ल्यू. ;1993द्धण 'ब्हट मैटर्स इन कॉलेज : फोर क्रिटिकल इयर्स रिवीजीटिड' जोसी बॉस।
4. बुच, एम.बी. (1976). सैकेण्ड सर्वे ऑपफ रिसर्च इन एजूकेशन, सेन्टर्स ऑपफ एडवान्सड स्टडी इन एजूकेशन, एम.एस. यूनीवर्सिटी बड़ौदा।
5. बुच, एम. बी. (1978 – 83). थर्ड सर्वे ऑपफ रिसर्च इन एजूकेशन, न्यू देहली : एनसीआरटी
6. बुच, एम. बी. (1985). पफोरथ सर्वे ऑपफ रिसर्च इन एजूकेशन, वोल्युम प्प ए न्यू देहली : एनसीआरटी
7. बुच, एम. बी. (1992). पिफफ्रथ सर्वे ऑपफ रिसर्च इन एजूकेशन, देहली, न्यू देहली : एनसीआरटी
8. थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन 1978–83 (P-454) न्यू देहली : एन. सी.आर.टी.।
9. शर्मा आर. ए. (2003). इन्वायरमैट एजूकेशन, मेरठ, सूर्या।